11

प्राण का लंगर

(6:9-20)

इब्रानियों की पुस्तक का लेखक अपने पाठकों को विनाश के तट तक ले गया।[1] वह उन्हें चोटी के किनारे तक ले गया और उन्हें नीचे के खतरों को दिखाने के लिए किनारे पर से झांकने दिया। फिर उसने उन्हें पीछे को खींच लिया: ''पर हे प्रियो यद्यपि हम ये बातें कहते हैं तौभी तुम्हारे विषय में हम इससे अच्छा और उद्धारवाली बातों का भरोसा करते हैं'' (6:9)। उसने उन्हें मसीह में अपने जीवनों का लंगर डालने का आग्रह करते हुए उन्हें आशा और सुरक्षा देने की पेशकश की (6:19)।

''उद्धार वाली बातों'' बाइबल का वाक्यांश, शिक्षकों तथा प्रचारकों को आकर्षित करता है। पूरी-पूरी पुस्तकें इसी वाक्यांश पर लिखी गई हैं; प्रवचनों की शृंखलाएं इसी पर दी गईं हैं। ये वाक्यांश सम्भवतया पाठकों के जीवनों से सम्बन्धित हैं जिनमें संकेत था कि उनका उद्धार हो गया था, जैसी परमेश्वर के लिए उनकी सेवा थी।

''उद्धार वाली बातों'' का अर्थ जो भी हो, आयत 9 एक आवश्यक ''प्रोत्साहन की बात'' है। लेखक ने ध्यान दिलाया था कि उसके पाठक वे नहीं थे, जो उन्हें होना चाहिए था, यानी वे भटक जाने के खतरे में थे। एक अर्थ में फिर उसने कहा, ''पर मुझे तुम में भरोसा है! मैं *नहीं* मानता कि तुम्हारे साथ ऐसा होने वाला है!'' हम में भरोसा रखने से दूसरों को बहुत सहायता मिलती है!

इन मसीही लोगों को भटकने से कौन सी चीज़ रोक सकती है? किस बात ने उन्हें प्रोत्साहित करना और विश्वासी बनाए रखना था? एक बात जिसकी उन्हें आवश्यकता थी वह *आशा* थी। आयत 11 में आगे देखें: ''पर हम बहुत चाहते हैं, कि तुम में से हर एक जन अन्त तक पूरी आशा के लिए ऐसा ही प्रयत्न करता रहे।'' फिर आयतों 18 और 19 में इन शब्दों पर ध्यान दें: ''उस *आशा* को जो सामने रखी हुई है प्राप्त करें। वह *आशा* हमारे प्राण के लिए ऐसा लंगर है जो सिर और दृढ़ है।'' प्राचीन जगत में लंगर *सुरक्षा* का प्रतीक था। असुरक्षित संसार में हमें सुरक्षा की आवश्यकता है। *आशा* हमें वह देती है।

बाइबली आशा मनोकामना नहीं है बल्कि यह इच्छा के साथ उम्मीद है। 1 कुरिन्थियों 13:13 में इसे विश्वास, आशा और प्रेम के तीन स्थिर रहने वाले गुणों में से एक बताया गया है। विश्वास और प्रेम पर कई सबक दिए जा चुके हैं, पर आशा पर बहुत कम। हमारा वचन पाठ आशा पर एक यादगारी वचन है। यह कई कारण बताता है कि हम आशा क्यों रख सकते हैं।

1. परमेश्वर के स्वभाव के कारण (6:10क)

परमेश्वर अन्यायी नहीं है। वह ''प्रेम के हमारे परिश्रम'' को भूलता नहीं है। मनुष्य होने के कारण हम भूल जाते हैं, परन्तु परमेश्वर नहीं भूलता।

2. अपनी पूरी कोशिश करने के द्वारा (6:10ख-12क)

मूल पाठकों के परिश्रम सिद्ध नहीं थे, परन्तु वे परिश्रम *प्रेम* की एक अभिव्यक्ति थे। उन्होंने कालांतर में साथी मसीही लोगों की सहायता की थी और *अब भी* वे पवित्र लोगों की सेवा कर रहे थे। लेखक ने उन्हें ''आलसी'' न होने बल्कि ''अन्त तक प्रयत्न करते रहने'' के लिए प्रोत्साहित किया। परमेश्वर सिद्धता की उम्मीद नहीं करता बल्कि वह हमारी पूरी कोशिश की उम्मीद करता है। जब हम पूरी कोशिश करते हैं तो उसे भाता है। जब हम इन दो पहले कारणों को मिलाने की कोशिश करते हैं तो हमें ''आशा का पूरा आश्वासन'' मिल सकता है!

3. क्योंकि, कालांतर में, परमेश्वर ने विश्वासयोग्य रहने वालों को आशीष दी (6:12ख-15)

लेखक ने अपने पाठकों को ''विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस लोगों का अनुकरण'' करने को प्रोत्साहित किया (आयत 12ख)। अध्याय 11 में उसने इस चुनौती को विस्तार दिया। अभी के लिए उसने उदाहरण के रूप में अब्राहम का इस्तेमाल किया (आयतें 13–15)। परमेश्वर ने अब्राहम को बड़े-बड़े वायदे दिए, पर उन वायदों को पूरा होने में कई साल बीत गए। उन वर्षों के दौरान अब्राहम को किस बात ने मज़बूत बनाए रखा? उसकी *आशा* ने (देखें रोमियों 4:18)।

4. क्योंकि परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता (6:16-18)

यह तथ्य कि परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता, आयत 13 में बताया गया था, परन्तु आयतों 16 से 18 में इस विचार को विस्तार दिया गया है। जब परमेश्वर कोई वायदा करता है तो हम इसे देने के लिए अपने जीवन सौंप सकते हैं! हमें आशा मिल सकती है!

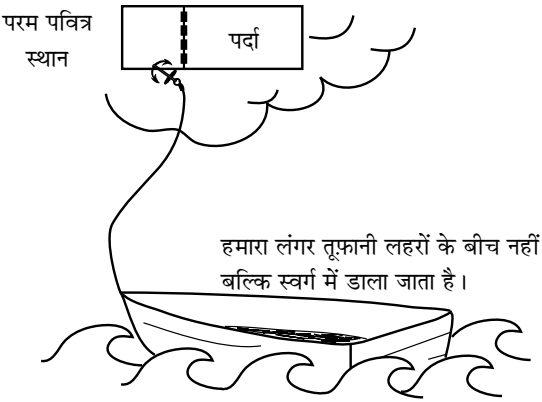

5. क्योंकि हमारी आशा का लंगर यीशु में है (6:18ख-20[2])

हमारे जीवनों का लंगर इस पृथ्वी की तूफ़ानी लहरों में नहीं बल्कि स्वर्ग में परम पवित्र स्थान में है।

इसका क्या महत्व है? यहीं पर तो *यीशु* है! वह हमारे लंगर को सुरक्षित रखने के लिए स्वर्ग में है। हमारी आशा यीशु में और उसमें है जो उसने हमारे लिए किया है (देखें कुलुस्सियों 1:27)।

आयत 20 में लेखक हमारे महायाजक के रूप में यीशु के विषय पर लौट आया। विशेषकर वह उस विचार की ओर वापस आया कि यीशु ''मलिकिसिदक की रीती पर'' यीशु हमारा महा याजक है (देखें 5:10)। इस पर हम अगले पाठ में आएंगे जिसका शीर्षक है ''परछाईं और वास्तविकता।''

सिखाने वाले के लिए नोट्स

इब्रानियों की पूरी पुस्तक में ही आशा पर ज़ोर दिया गया है (देखें 3:6; 7:19; 10:23)।

टिप्पणियां

[1]इफिसियों 6:6, 8 पर विशेष ज़ोर देने के साथ ''आत्मिक विकास की आवश्यकता'' पाठ की समीक्षा की जा सकती है। [2]मन्दिर में पवित्र स्थान और परम पवित्र स्थान के बीच एक पर्दा था। इस पुस्तक में मन्दिर का रखाचित्र देखें।